OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 6 [Nov- Dec] Year 2025*

Research Article

झारखंड की राजधानी रांची में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार

अंजुम सदाब [1*], डॉ. नीतू कुमारी [2]

[1] शोधार्थी,वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची, झारखण्ड, भारत

[2] शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापक, वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author: * अंजुम सदाब

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18313155

सारांश

प्रस्तुत शोध का विषय "झारखंड की राजधानी रांची में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार" झारखंड की समकालीन राजनीति को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि झारखंड की राजनीति केवल सत्ता परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं रही, बल्कि यह एक लंबे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संघर्ष की उपज रही है। झारखंड आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने क्षेत्रीय राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जिसकी केंद्रीय भूमि राजधानी रांची बनी। रांची न केवल प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुई, बल्कि उसने झारखंडी अस्मिता, आदिवासी अधिकार और क्षेत्रीय स्वायत्तता के आंदोलन को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

इस शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार औपनिवेशिक काल से चले आ रहे भूमि-विस्थापन, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, सामाजिक उपेक्षा और सांस्कृतिक हाशियाकरण ने जनजातीय समाज में असंतोष उत्पन्न किया। स्वतंत्रता के बाद भी जब यह क्षेत्र बिहार राज्य के अंतर्गत रहा, तब विकास की असमानताओं और प्रशासनिक उपेक्षा ने क्षेत्रीय अस्मिता को और अधिक सशक्त किया। इसी सामाजिक यथार्थ से क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई, जिसका पहला संगठित रूप झारखंड पार्टी के रूप में सामने आया। आगे चलकर झारखंड मुक्ति मोर्चा, ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन तथा अन्य क्षेत्रीय संगठनों ने इस चेतना को जनआंदोलन में परिवर्तित किया।

शोध यह स्पष्ट करता है कि रांची ने आंदोलन और राजनीति के बीच सेतु का कार्य किया। यहीं से राजनीतिक रणनीतियाँ बनीं, नेतृत्व विकसित हुआ और जनसभाओं, छात्र आंदोलनों तथा सामाजिक संगठनों के माध्यम से जनसमर्थन सुदृढ़ हुआ। राजधानी होने के कारण प्रशासनिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों और मीडिया की उपस्थिति ने क्षेत्रीय दलों को वैचारिक तथा संगठनात्मक विस्तार प्रदान किया। रांची विश्वविद्यालय से निकली छात्र राजनीति ने क्षेत्रीय दलों को नई पीढ़ी का नेतृत्व सौंपा, जिसने आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार दिया। इस अध्ययन में यह भी विवेचित किया गया है कि क्षेत्रीय दलों का संघर्ष केवल अलग राज्य की मांग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें जल-जंगल-जमीन, भाषा, संस्कृति, रोजगार, विस्थापन और स्थानीय स्वशासन जैसे मुद्दे निरंतर शामिल रहे। 2000 में झारखंड राज्य निर्माण इन संघर्षों की ऐतिहासिक परिणति थी, परंतु इसके बाद भी क्षेत्रीय दलों की भूमिका समाप्त नहीं हुई। राज्य गठन के पश्चात ये दल आंदोलनकारी स्वरूप से निकलकर शासन और नीति-निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बने। शोध में यह निष्कर्ष सामने आता है कि राज्य निर्माण के बाद क्षेत्रीय दलों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे गठबंधन राजनीति, सत्ता का दबाव, वैचारिक विचलन और जनअपेक्षाओं की पूर्ति। इसके बावजूद क्षेत्रीय दल आज भी झारखंड की राजनीति में प्रासंगिक बने हुए हैं। वे स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ते हैं और लोकतांत्रिक ढांचे में क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करते हैं।

अंततः यह शोध प्रतिपादित करता है कि झारखंड की राजधानी रांची में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार केवल राजनीतिक घटनाक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, पहचान की राजनीति और लोकतांत्रिक अधिकारों की सामूहिक यात्रा है। यह अध्ययन झारखंड की राजनीति को समझने के लिए एक ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक आधार प्रस्तुत करता है तथा भविष्य के शोध के लिए नई दिशाएँ उद्घाटित करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 12-10-2025
- **Accepted:** 25-11-2025
- **Published:** 31-12-2025
- **IJCRM:**4(6); 2025: 631-634
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

अंजुम सदाब, कुमारी नीतू. झारखंड की राजधानी रांची में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कंटेम्पररी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी. 2025;4(6):631-634.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

प्रमुख शब्द: झारखंड आंदोलन, रांची, क्षेत्रीय दल, आदिवासी राजनीति, झारखंड मुक्ति मोर्चा, छात्र आंदोलन, पहचान की राजनीति, क्षेत्रीय चेतना, राज्य निर्माण, लोकतांत्रिक संघर्ष।

© 2025 अंजुम सदाब, डॉ. नीतू कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

भारतीय लोकतंत्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में उसकी बहुलतावादी राजनीतिक संरचना का होना है। यहाँ केवल राष्ट्रीय दल ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय दल भी राजनीति की दिशा और दशा को गहराई से प्रभावित करते रहे हैं। क्षेत्रीय दलों का उद्भव केवल सत्ता-प्राप्ति की आकांक्षा से नहीं हुआ, बल्कि वे सामाजिक असंतोष, सांस्कृतिक उपेक्षा, आर्थिक शोषण और पहचान की राजनीति की उपज रहे हैं। इसी क्रम में झारखंड की राजनीति का विकास भी एक लंबे सामाजिक-ऐतिहासिक संघर्ष से जुड़ा रहा है, जिसकी केंद्रीय भूमि राजधानी रांची रही है।

झारखंड का क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से जनजातीय बहुल क्षेत्र रहा है, जहाँ आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, परंपरा और सामाजिक संरचना के साथ सदियों से निवास करता आया है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के समय से ही इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, बाहरी हस्तक्षेप और प्रशासनिक उपेक्षा ने असंतोष को जन्म दिया। स्वतंत्रता के बाद भी जब यह क्षेत्र बिहार राज्य का हिस्सा बना रहा, तब राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो सकीं। इसी असंतोष ने धीरे-धीरे राजनीतिक चेतना का रूप लिया और यही चेतना आगे चलकर क्षेत्रीय दलों के गठन का आधार बनी।

रांची न केवल झारखंड की प्रशासनिक राजधानी रही, बल्कि यह झारखंड आंदोलन की वैचारिक, संगठनात्मक और रणनीतिक धुरी भी बनी। आंदोलनों की योजना, सभाएँ, छात्र राजनीति, मजदूर संगठनों की बैठकें और राजनीतिक विमर्श यहीं से संचालित हुए। इस प्रकार रांची केवल सत्ता का केंद्र नहीं, बल्कि संघर्ष की प्रयोगशाला बन गई। इसी भूमि से झारखंड के क्षेत्रीय दलों का जन्म हुआ, जिन्होंने आंदोलन से राजनीति और राजनीति से सत्ता तक की यात्रा तय की।

निबंधात्मक विवेचन

झारखंड में क्षेत्रीय राजनीति के बीज औपनिवेशिक काल में ही पड़ चुके थे। बिरसा मुंडा का उलगुलान केवल धार्मिक या सामाजिक विद्रोह नहीं था, बल्कि वह राजनीतिक चेतना का प्रारंभिक स्वरूप था। भूमि अधिकार, जल-जंगल-जमीन और स्वशासन की अवधारणा ने जनजातीय समाज को संगठित किया। स्वतंत्रता के बाद जब राज्यों का पुनर्गठन हुआ, तब भी झारखंड को अलग पहचान नहीं मिली। यही उपेक्षा आगे चलकर क्षेत्रीय राजनीतिक चेतना के रूप में विकसित हुई।

1950 के दशक में जयपाल सिंह मुंडा के नेतृत्व में झारखंड पार्टी का गठन हुआ, जिसने पहली बार संवैधानिक ढंग से अलग झारखंड राज्य की मांग को राजनीतिक मंच दिया। यद्यपि यह पार्टी बाद में कमजोर हुई, लेकिन इसने क्षेत्रीय राजनीति की नींव रख दी। रांची इस दौरान राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र बना, जहाँ से आंदोलन को वैचारिक दिशा मिली।

1970 के दशक तक आते-आते झारखंड आंदोलन एक नए चरण में प्रवेश कर चुका था। यह दौर तीव्र औद्योगीकरण, खनन विस्तार और विस्थापन का था। रांची, बोकारो, धनबाद और जमशेदपुर जैसे शहरों में आदिवासी भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण हुआ। इससे जनजातीय समाज में गहरा असंतोष फैला। इसी पृष्ठभूमि में 1973 में झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ, जिसने आंदोलन को जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

झारखंड मुक्ति मोर्चा केवल एक राजनीतिक दल नहीं था, बल्कि वह एक व्यापक सामाजिक आंदोलन था। इसके नेता शिबू सोरेन, निर्मल महतो और अन्य कार्यकर्ता गांव-गांव, जंगल-जंगल जाकर लोगों को संगठित करते रहे। रांची में होने वाली सभाएँ आंदोलन की पहचान बन गईं। राजधानी में धरना-प्रदर्शन, रेल रोको आंदोलन और विशाल जनसभाएँ क्षेत्रीय राजनीति को मजबूती देने लगीं।

1980 और 1990 का दशक झारखंडी राजनीति के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ। इसी काल में छात्र राजनीति ने आंदोलन को नई ऊर्जा दी। ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (AJSU) का उदय रांची विश्वविद्यालय से जुड़ा हुआ था। छात्र आंदोलन ने न केवल शिक्षण संस्थानों में बल्कि संपूर्ण समाज में राजनीतिक चेतना फैलाने का कार्य किया। रांची इस छात्र राजनीति का मुख्य केंद्र बन गया, जहाँ से आंदोलन का नेतृत्व उभरा।

इस दौर में क्षेत्रीय दलों को अनेक प्रकार के संघर्षों से गुजरना पड़ा। एक ओर उन्हें राष्ट्रीय दलों की राजनीतिक ताकत से जूझना था, तो दूसरी ओर आंतरिक विभाजन और वैचारिक मतभेद भी चुनौती बने। फिर भी इन दलों ने जनजातीय पहचान, स्थानीय संसाधनों पर अधिकार और स्वशासन की अवधारणा को निरंतर जीवित रखा।

2000 में जब झारखंड राज्य का गठन हुआ, तब यह क्षेत्रीय दलों के दशकों लंबे संघर्ष की परिणति थी। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के पीछे रांची की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। राज्य निर्माण के बाद क्षेत्रीय दलों की भूमिका समाप्त नहीं हुई, बल्कि उनका स्वरूप परिवर्तित हुआ। आंदोलनकारी दल अब शासन की जिम्मेदारी निभाने लगे।

राज्य बनने के बाद झारखंड मुक्ति मोर्चा एक सशक्त राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। उसने सत्ता में भागीदारी की और स्थानीय मुद्दों को नीति-निर्माण के स्तर तक पहुँचाया। वहीं AJSU जैसे दलों ने गठबंधन राजनीति के माध्यम से अपनी उपस्थिति बनाए रखी। बाद के वर्षों में झारखंड विकास मोर्चा, झारखंड पार्टी के पुनर्गठित रूप और अन्य छोटे क्षेत्रीय दल भी सामने आए।

रांची में क्षेत्रीय दलों का विस्तार शहरी राजनीति के साथ जुड़ता चला गया। पहले जहाँ आंदोलन का केंद्र ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्र थे, वहीं अब राजधानी में शिक्षा, बेरोजगारी, पलायन, स्मार्ट सिटी, नगर विस्तार और प्रशासनिक पारदर्शिता जैसे विषय प्रमुख बनने लगे। क्षेत्रीय दलों ने इन मुद्दों को स्थानीय दृष्टि से उठाकर अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखी।

समय के साथ क्षेत्रीय दलों को कई आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा। सत्ता में आने के बाद आंदोलन की भावना कमजोर होने, भ्रष्टाचार, परिवारवाद और अवसरवादी राजनीति के आरोप लगे। फिर भी यह सत्य है कि झारखंड की राजनीति आज भी क्षेत्रीय दलों के बिना अधूरी है। वे स्थानीय समाज की आकांक्षाओं को स्वर देते हैं और राष्ट्रीय राजनीति के केंद्रीकरण के बीच क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में रांची झारखंड की राजनीति का प्रशासनिक ही नहीं, बल्कि वैचारिक केंद्र बनी हुई है। नए क्षेत्रीय दल, युवा नेतृत्व और सामाजिक संगठनों के माध्यम से राजनीति का नया रूप उभर रहा है। जल-जंगल-जमीन के साथ अब संविधान, आरक्षण, भाषा और स्थानीय स्वशासन जैसे प्रश्न राजनीतिक विमर्श के केंद्र में हैं।

इस प्रकार झारखंड की राजधानी में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार केवल राजनीतिक घटनाओं का क्रम नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन की लोकतांत्रिक यात्रा है। यह यात्रा पहचान से

© 2025 अंजुम सदाब, डॉ. नीतू कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अधिकार तक, आंदोलन से सत्ता तक और संघर्ष से नीति तक फैली हुई है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि झारखंड की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का उद्भव, संघर्ष और विस्तार केवल राजनीतिक संरचना का परिवर्तन नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान और लोकतांत्रिक अधिकारों की लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है। झारखंड की राजधानी रांची इस संपूर्ण प्रक्रिया का केंद्रबिंदु रही है, जहाँ से विचार उत्पन्न हुए, आंदोलनों को दिशा मिली और अंततः क्षेत्रीय राजनीति ने संस्थागत स्वरूप ग्रहण किया।

यह शोध प्रमाणित करता है कि झारखंड के क्षेत्रीय दलों की जड़ें जनजातीय समाज की ऐतिहासिक उपेक्षा में निहित हैं। औपनिवेशिक काल से प्रारंभ हुए भूमि अधिग्रहण, वन कानूनों, विस्थापन और खनिज संसाधनों के दोहन ने आदिवासी समाज को हाशिए पर धकेल दिया। स्वतंत्रता के बाद भी यह स्थिति बनी रही, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय असंतोष ने राजनीतिक चेतना का रूप लिया। इसी चेतना से क्षेत्रीय दलों का जन्म हुआ, जिन्होंने लोकतांत्रिक माध्यमों से अपनी मांगों को स्वर प्रदान किया।

अध्ययन यह दर्शाता है कि रांची केवल प्रशासनिक राजधानी नहीं रही, बल्कि वह झारखंड आंदोलन की वैचारिक प्रयोगशाला बन गई। यहीं से नेतृत्व उभरा, रणनीतियाँ बनीं और जनसमर्थन संगठित हुआ। रांची विश्वविद्यालय, छात्र संगठन, मजदूर संघ, सामाजिक मंच और मीडिया संस्थानों ने क्षेत्रीय दलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस राजधानी-केंद्रित राजनीतिक सक्रियता ने झारखंड आंदोलन को स्थानीय से राज्यस्तरीय और फिर राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया।

क्षेत्रीय दलों का संघर्ष केवल पृथक राज्य की मांग तक सीमित नहीं था। इस संघर्ष में जल-जंगल-जमीन की रक्षा, आदिवासी अस्मिता, भाषाई सम्मान, सांस्कृतिक स्वायत्तता, रोजगार के अवसर, विस्थापन पुनर्वास तथा स्थानीय स्वशासन जैसे मुद्दे निरंतर जुड़े रहे। इन मुद्दों ने क्षेत्रीय राजनीति को भावनात्मक ही नहीं, बल्कि वैचारिक गहराई भी प्रदान की। यही कारण है कि क्षेत्रीय दलों को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ और वे झारखंड की राजनीति की अपरिहार्य शक्ति बन गए।

2000 में झारखंड राज्य का गठन इन दशकों लंबे संघर्षों की ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में सामने आया। यह राज्य निर्माण केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं था, बल्कि झारखंडी समाज की राजनीतिक मान्यता थी। इस उपलब्धि में क्षेत्रीय दलों की भूमिका निर्णायक रही। किंतु शोध यह भी स्पष्ट करता है कि राज्य निर्माण के बाद क्षेत्रीय दलों की चुनौतियाँ समाप्त नहीं हुईं, बल्कि उनका स्वरूप बदल गया। आंदोलनकारी राजनीति से शासन की राजनीति में प्रवेश करना इन दलों के लिए एक कठिन संक्रमण काल सिद्ध हुआ।

राज्य गठन के पश्चात क्षेत्रीय दलों को सत्ता, प्रशासन और विकास की नई जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा। इस चरण में उन्हें गठबंधन राजनीति, संसाधनों की सीमाएँ, नौकरशाही दबाव तथा जनता की बढ़ती अपेक्षाओं से जूझना पड़ा। कुछ अवसरों पर वैचारिक विचलन, आंतरिक गुटबाजी और सत्ता-केन्द्रित राजनीति ने इन दलों की साख को प्रभावित किया। फिर भी यह तथ्य असंदिग्ध है कि क्षेत्रीय दल झारखंड की राजनीति से कभी हाशिए पर नहीं गए।

अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि समय के साथ क्षेत्रीय दलों ने स्वयं को परिवर्तित किया है। पहले जहाँ उनका संघर्ष ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों तक सीमित था, वहीं अब रांची जैसे शहरी केंद्रों में शिक्षा, बेरोजगारी, पलायन, शहरी विकास, स्थानीय प्रशासन और पारदर्शिता जैसे मुद्दे उनकी राजनीति का हिस्सा बन चुके हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय दल स्थिर नहीं रहे, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप अपनी राजनीतिक दिशा को ढालते रहे हैं।

समकालीन झारखंड राजनीति में क्षेत्रीय दल लोकतांत्रिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रीय दलों की व्यापक संगठनात्मक शक्ति के बीच ये दल स्थानीय समस्याओं को प्राथमिकता देते हैं और जनता तथा शासन के बीच सेतु का कार्य करते हैं। यह भूमिका लोकतंत्र को जमीनी स्तर तक मजबूत करती है तथा सत्ता के केंद्रीकरण को सीमित करती है।

इस शोध से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि क्षेत्रीय दलों की सफलता केवल चुनावी प्रदर्शन से नहीं मापी जा सकती। उनकी वास्तविक उपलब्धि यह रही है कि उन्होंने झारखंडी समाज को राजनीतिक पहचान प्रदान की, हाशिए पर खड़े समुदायों को लोकतांत्रिक मंच दिया और राज्य निर्माण जैसी ऐतिहासिक उपलब्धि को संभव बनाया। रांची इस संपूर्ण राजनीतिक यात्रा की साक्षी भी है और सूत्रधार भी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि झारखंड की राजधानी में क्षेत्रीय दलों का गठन, संघर्ष और विस्तार भारतीय लोकतंत्र की उस जीवंत परंपरा का उदाहरण है, जहाँ सामाजिक आंदोलन राजनीतिक संस्थाओं में परिवर्तित होकर सत्ता को जवाबदेह बनाते हैं। भविष्य में भी झारखंड की राजनीति की दिशा और दशा काफी हद तक इन क्षेत्रीय दलों की वैचारिक प्रतिबद्धता, संगठनात्मक ईमानदारी और जनसरोकारों से जुड़ाव पर निर्भर करेगी। यदि ये दल अपने मूल उद्देश्य—जनता, पहचान और न्याय—से जुड़े रहते हैं, तो वे झारखंड के लोकतांत्रिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाते रहेंगे।झारखंड की राजनीति को समझने के लिए क्षेत्रीय दलों की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। रांची इस पूरी राजनीतिक यात्रा का केंद्र रही है, जहाँ विचार जन्म लेते हैं, आंदोलन आकार लेते हैं और सत्ता की दिशा तय होती है। क्षेत्रीय दलों ने न केवल अलग राज्य का सपना साकार किया, बल्कि झारखंडी अस्मिता को लोकतांत्रिक मंच प्रदान किया। यद्यपि आज उनकी चुनौतियाँ बदल चुकी हैं, फिर भी उनका ऐतिहासिक योगदान और वर्तमान प्रासंगिकता निर्विवाद है। झारखंड का राजनीतिक भविष्य भी तभी संतुलित रहेगा जब क्षेत्रीय दल जनता की आकांक्षाओं के साथ ईमानदारी से जुड़े रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. सिंह, के. एस. ट्राइबल सोसाइटी इन इंडिया. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1985।
2. शेखर, दयामणि. झारखंड आंदोलन का इतिहास. राँची: झारखंड प्रकाशन; 2003।
3. झा, प्रभात कुमार. झारखंड की राजनीति. राँची: झारखंड अध्ययन केंद्र; 2006।
4. भारत निर्वाचन आयोग. झारखंड विधानसभा चुनाव रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग; विभिन्न वर्ष।
5. मुंडा, रामदयाल. आदिवासी अस्मिता और राजनीति. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2001।
6. शर्मा, बी. डी. झारखंड आंदोलन: संघर्ष और उपलब्धि. नई दिल्ली: जनसत्ता प्रकाशन; 1997।

© 2025 अंजुम सदाब, डॉ. नीतू कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7. शुक्ल, रामस्वरूप. भारतीय क्षेत्रीय राजनीति. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1994।
8. यादव, योगेन्द्र. लोकतंत्र और क्षेत्रीय दल. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2000।
9. भारतीय राजनीति शोध पत्रिका. विभिन्न अंक. नई दिल्ली: भारतीय राजनीति अध्ययन परिषद; विभिन्न वर्ष।
10. राँची विश्वविद्यालय. राजनीति विज्ञान अध्ययन सामग्री. राँची: राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय; विभिन्न वर्ष।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 अंजुम सदाब, डॉ. नीतू कुमारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/